

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि



अणुव्रत

ई-संस्करण

वर्ष : 4, अंक : 6

अक्टूबर 2026



चरित्र खो गया तो
सब कुछ खो गया



वर्ष : 4 अंक : 6

अक्टूबर 2026

संपादक
संचय जैन

सह संपादक
मोहन मंगलम

संयोजक समाचार
पंकज दुधोड़िया

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

पेज सेटिंग
मनीष सोनी

ई-संस्करण
विवेक अग्रवाल



महान लोग साधारण कामों को भी इतने असाधारण तरीके से करते हैं कि वे अद्भुत लगने लगते हैं। युगप्रधान आचार्य तुलसी ने संत और संन्यासी होकर भी एक समाज सुधारक, साहित्यकार, संगीतज्ञ, परिव्राजक, सर्वधर्म समन्वयकारी, स्त्री-पुरुष समानता, शांति, समता और प्राणी मात्र के लिए अत्यंत दयालु व्यक्तित्व की बहुआयामी भूमिकाओं का कुशलतापूर्वक निर्वहन किया। उनके द्वारा प्रतिपादित 'अणुव्रत' का सिद्धांत मानव जाति को उनका महानतम योगदान है। आज आचार्य तुलसी के 'अणुव्रत' आंदोलन की जरूरत और अधिक शिद्धत से महसूस की जा रही है।

अरुणा रॉय
सामाजिक कार्यकर्ता



अध्यक्ष : **प्रतापसिंह दुगड़**
महामंत्री : **मनोज सिंघवी**
कोषाध्यक्ष : **राकेश बरड़िया**



**अणुव्रत विश्व
भारती सोसायटी**

अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल
उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 2

दूरभाष : 011-23233345

मोबाइल : 9116634512

www.anuvibha.org
anuvrat.patrika@anuvibha.org

चुनौती भीतर के रावण को

भारत का महत्वपूर्ण त्योहार है दशहरा। हर वर्ष हजारों-लाखों की संख्या में रावण तैयार करना और फिर उन्हें भस्म कर देना - इसका अपना एक प्रतीकात्मक महत्व है। यह प्रतीक है अपनी विरासत को संजोने का और उससे प्रेरणा लेने का। हमें यह बचपन से बताया जाता रहा है कि दशहरा बुराइयों पर अच्छाइयों की जीत का त्योहार है। लेकिन, जब मात्र हम रावण को बाहर ही बाहर देखते रहेंगे और उसके बुत का नाश कर खुश होते रहेंगे, अंदर बैठे रावण की सुध हम कैसे ले पाएंगे? प्रतीक की गरिमा इसी में है कि हम उसे अपने दिल में गहरे संजोएं और आचरण में भी उतारें। यह कहना अतिशयोक्ति तो नहीं कि बाहरी रावणों को मारने का हक उसी को है जो अपने भीतर के रावणों का खात्मा कर चुका है!

अणुव्रत के तरकश में वो तीर हैं जो हमारे अंदर बैठे रावण को खत्म करने की क्षमता रखते हैं। अणुव्रत का अहिंसक हथियार अणुबम के हिंसक हथियार से भी अधिक प्रभावी हो सकता है यदि हर एक इंसान इसके उपयोग में प्रशिक्षित हो जाये। आज दुनिया को अणुबम की जरूरत नहीं, अणुव्रत की जरूरत है। विध्वंस की नहीं, सृजन की जरूरत है। हमें मुक्ति बाहरी रावणों से नहीं, भीतर के रावणों से चाहिए। चुनौती हमें भीतर के रावणों को देनी है, अणुव्रत का हथियार हमारे हाथ में है।

आइए, इस दशहरे बाहरी आनंदोत्सव के साथ-साथ भीतरी आनंदोत्सव भी मनाएं! हमेशा एक छोटी-सी शुरुआत ही बड़ी सफलता का रास्ता प्रशस्त करती है।

- संचय जैन

sanchay_avb@yahoo.com

चरित्र खो गया तो सब कुछ खो गया

■ आचार्य तुलसी

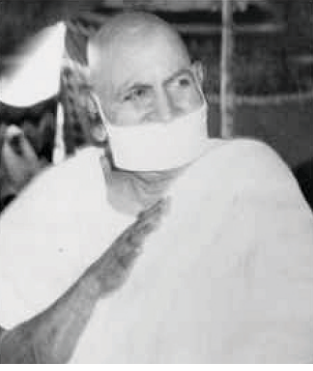
व्रत जीवन को ऊँचाई तक ले जाने वाला सोपान है। व्रत वह जागरूक प्रहरी है, जो जीवन में प्रविष्ट होने वाले अवांछनीय तत्त्वों का अवरोधक है। व्रत एक छत है, जो वर्षा, आतपरूप प्रतिकूल परिस्थितियों से त्राण देने में सक्षम है। व्रत वह स्तम्भ है, जिसके आधार पर चरित्र का भवन खड़ा हो सकता है। व्रत की गरिमा क्या है? यह अनुभव वही व्यक्ति कर पाता है, जिसकी व्रतों में आस्था है। आस्था के अभाव में व्रत का स्वीकरण और आचरण दोनों ही कठिन हो जाते हैं।

स्थानांग सूत्र में चार प्रकार के पुरुषों का विवेचन है -

- रूप-संपन्न है, शील-संपन्न नहीं है।
- शील-संपन्न है, रूप-संपन्न नहीं है।
- रूप-संपन्न है, शील-संपन्न है।
- रूप-संपन्न भी नहीं है, शील संपन्न भी नहीं है।

समग्र विश्व की मानव जाति को हम इन चार वर्गों में विभाजित कर सकते हैं। प्रथम वर्ग के व्यक्ति आकर्षक व्यक्तित्व, सुन्दर आकृति और विपुल वैभव से संपन्न होते हैं, किंतु चरित्र की दृष्टि से संपन्न नहीं होते। दूसरे वर्ग के व्यक्ति चरित्र के क्षेत्र में अगुआ होते हैं, पर रूप, वैभव आदि की अपेक्षा शून्य होते हैं। तीसरे वर्ग के व्यक्ति रूप-संपदा और चरित्र-संपदा के समन्वित रूप होते हैं। चौथे वर्ग में न रूप-संपदा का प्रवेश होता है और न चरित्र-संपदा का।

रूप और चरित्र की प्रतिद्वंद्विता में पहला स्थान चरित्र को मिले, यह नैतिक अधिकार की बात है। 'चरित्र खो गया तो सब कुछ खो गया' - इस जनश्रुति को मैं अपना पूरा समर्थन देता हूँ।



शास्त्रों में चरित्र को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। चरित्र-निष्ठा जाग्रत चेतना का प्रतीक है। चरित्र को जीवन का अपरिहार्य अंग माना गया है।

शास्त्रों में चरित्र को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। चरित्र-निष्ठा जाग्रत चेतना का प्रतीक है। चरित्र को जीवन का अपरिहार्य अंग माना गया है। इतना होने पर भी चरित्र-निष्ठा और चरित्रशीलता का अपेक्षित विकास नहीं हुआ है। इसके पीछे निश्चित रूप से कुछ ठोस कारणों का हाथ रहना चाहिए। मेरे अभिमत से संभावित कारण-शृंखला इस प्रकार की हो सकती है -

- चारित्रिक निष्ठा में लाभानुभूति का अभाव
- सामाजिक मानदंडों का प्रभाव
- कृत्रिम प्रतिष्ठा का व्यामोह
- रहन-सहन का स्तर ऊँचा उठाने की होड़
- नैतिक बल का अभाव
- अवांछनीय प्रवृत्तियों का अनुकरण
- परिस्थितियां
- बुराई का प्रतिकार करने में उदासीनता।

कुछ और भी कारण हो सकते हैं। कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि चारित्रिक मूल्यों के प्रति जनता का विश्वास कम हो गया है। विश्वास की प्रबलता व्यक्ति को किसी भी परिस्थिति में चरित्रहीनता की ओर अग्रसर होने से रोकती है। ऊपर जिन कारणों की चर्चा की गयी है, उनका निवारण तभी हो सकता है, जब व्यक्ति साध्यनिष्ठ होकर साध्य-प्राप्ति के लिए सतत समुचित प्रयत्न करता रहे। उन कारणों को नकारने मात्र से चारित्रिक आस्था का निर्माण नहीं होगा। सामाजिक मानदंडों को भी अस्वीकृत

“प्रेरणा अंदर से मिले या बाहर से, उसके द्वारा जो परिवर्तन आता है, वह स्थायी रहे तो लोक-जीवन चारित्रिक संपदा से संपन्न हो सकता है।”

कर देने से काम नहीं होता। इनके लिए नये मानकों को स्थापित करना आवश्यक है, नये मूल्यों को प्रतिष्ठा देना अपेक्षित है।

चरित्र-निष्ठा के संदर्भ में धर्म-गुरुओं पर विशेष दायित्व आता है कि वे अपने अनुयायियों के अज्ञान का आवरण हटाकर उनका उचित पथदर्शन करें। इस संदर्भ में जैन दर्शन से हमें एक तत्त्व मिला - धर्म। धर्म और संप्रदाय दो हैं। धर्म आत्मा है, संप्रदाय शरीर है। धर्म एक विशाल नगर है, संप्रदाय उसके मुहल्ले हैं। धर्म एक भवन है, संप्रदाय उसके भिन्न-भिन्न कक्ष हैं। धर्म-तत्त्व के विकास और सुरक्षा में संप्रदाय का सहयोग हो सकता है, किंतु धर्म और संप्रदाय में अविनाशी गठबंधन नहीं है। संप्रदाय के बिना धर्म टिक सकता है, पर धर्म के बिना कोई संप्रदाय चलाये, यह प्रवंचना है। संप्रदाय की सीमाओं में धर्म को पल्लवन मिल सकता है पर संप्रदायवाद के घेरे में धर्म को पोषण मिले, यह संभव नहीं लगता। संप्रदाय को मैं बुरा नहीं मानता, पर संप्रदायवाद में खतरे की संभावना देखता हूँ।

असांप्रदायिक और व्यापक दृष्टिकोण को सामने रखकर हमने अणुव्रत आंदोलन का काम शुरू किया। देश के व्यापारी, विद्यार्थी, सरकारी कर्मचारी, अधिकारी आदि सभी वर्गों के व्यक्ति मानवीय आचार संहिता के प्रति सजग हो रहे हैं।

धर्म केवल उपदेश से जीवनगत नहीं हो सकता। वास्तविक परिवर्तन आत्म-प्रेरणा से होता है। प्रेरणा अंदर से मिले या बाहर से, उसके द्वारा जो परिवर्तन आता है, वह स्थायी रहे तो लोक-जीवन चारित्रिक संपदा से संपन्न हो सकता है।

अणुव्रत आचार संहिता स्वरूप की दृष्टि से परिपूर्ण प्रतीत होती है। आचरण का जहाँ तक प्रश्न है, व्यक्ति-व्यक्ति को

इसके लिए तैयार होना होगा। यह काम पथदर्शकों और प्रचारकों पर छोड़ देने से जनता का जीवन नहीं बदलेगा। नैतिक और चारित्रिक जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने के लिए यदि आपके पास समय नहीं है तो कोई भी आचार संहिता क्या कर सकती है?

नशे के दुष्प्रभावों पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के उद्गार सुनने के लिए वीडियो के चिह्न पर क्लिक करें...



अणुव्रत विश्व भारती

की एक अभिनव पहल

अणुव्रत पत्रिका

ई-संस्करण

निःशुल्क पत्रिका प्राप्त करने के लिए दिये गये व्हाट्सएप के चिह्न का स्पर्श कर अपना संदेश हमें भेज सकते हैं।

ई-पत्रिका नियमित भेजने के लिए आपका मोबाइल नंबर हमारी सूची में स्वचलित रूप से पंजीकृत हो जाएगा।



कहीं बहुत देर न हो जाये!

■ संचय जैन

बच्चों के बीच रहना दुनिया का सबसे सुकूनदायक अनुभव होता है। मैं जब भी बच्चों के किसी समूह से बात करता हूँ तो कुछ प्रश्न अक्सर पूछता हूँ - क्या कोई बच्चा बड़ा होकर बुरा इंसान बनना चाहता है? जवाब 'नहीं' मैं आता है। अगला प्रश्न होता है - तो फिर किसी बच्चे के माँ-बाप या शिक्षक ऐसा चाहते होंगे? बच्चे इस प्रश्न को ही बचकाना समझते हैं - ऐसा कैसे हो सकता है? इसके बाद जो प्रश्न होता है, वह बच्चों को सोचने के लिए मजबूर कर देता है।

कोई बुरा इंसान नहीं बनना चाहता फिर भी बड़े होकर बहुत लोग बुरे बन जाते हैं। क्यों??? हर बच्चा इस प्रश्न का जवाब ढूँढ़ेगा तभी बुरा इंसान बनने की सम्भावनाओं को समाप्त किया जा सकेगा।

एक बड़ी समस्या हम बड़ों के साथ

बच्चों के साथ-साथ बड़ों को भी इस यथार्थ को समझना आवश्यक है, शायद सबसे ज्यादा जरूरी है। प्रत्येक अभिभावक का यह सपना होता है कि उसकी संतान उससे भी कई गुणा अधिक सफल बने। इस सपने को पूरा करने के लिए वे क्या-क्या नहीं करते! लेकिन,

- क्या हर अभिभावक अपनी चाहत की पूर्ति में सफल हो पाते हैं?
- सारे प्रयासों के बावजूद आखिर क्या चूक रह जाती है उनसे?
- या फिर, बुरा इंसान बनने के पीछे क्या दोष सिर्फ परिस्थितियों का होता है?

- क्या समाज और दुनिया ही इसके लिए उत्तरदायी होते हैं?
- और यदि परिस्थितियाँ, समाज और दुनिया ही जिम्मेदार हैं तो इनका सामना करने की क्षमता विकसित करना किसकी जिम्मेदारी है?

ये प्रश्न नये नहीं हैं। इनका समाधान भी आसान नहीं है। कारण बहुआयामी हैं तो निवारण भी बहुआयामी ही होंगे।



मैं इस समस्या के एक आयाम पर चर्चा करना चाहता हूँ। यह पक्ष विशेषतः अभिभावकों से जुड़ा है। अभिभावक जिन तौर-तरीकों को बच्चे के बेहतर निर्माण का हथियार मान कर उपयोग कर रहे होते हैं, यही तरीके कहीं बच्चे के विकास

में बाधक की भूमिका तो नहीं निभा रहे होते हैं?

प्रलोभन का लुभावना हथियार

बच्चे से इच्छित काम करवाने के लिए उसे प्रलोभन देना आम बात है। लेकिन क्या हर छोटे-मोटे काम के लिए लालच का सहारा लेना उचित है? बचपन में मिली यह मस्तिष्क की ट्रेनिंग जीवन भर उसे हर काम के पीछे लाभ ढूँढ़ने को कहती है। ये बाहरी लालच उसकी अपनी आत्मसंतुष्टि पर इतने हावी हो जाते हैं कि उसे हर काम में स्वार्थ ढूँढ़ना स्वाभाविक लगता है।

भय की ताउम्र कैद

बच्चे से अपने मन-माफिक काम कराने में यदि प्रलोभन का हथियार काम नहीं आता तो उसे दण्ड का, मारपीट या उसकी पसंदीदा वस्तु से वंचित कर देने का डर दिखाया जाता है। हमारे दिखाये डर से वह हमारी बात मान लेता है और हमें लगता है कि हम अपने प्रयास में सफल हो गये लेकिन बच्चे का अवचेतन मन इस बात के लिए प्रशिक्षित

हो जाता है कि डर के सामने हथियार डाल देने हैं और यदि सामने डर नहीं है तो उस काम को करने से बचा जा सकता है, भले ही वह काम महत्वपूर्ण और उपयोगी है। डर के मारे काम करना उसकी आदत हो जाती है।

हालाँकि बुरे काम से डरना अच्छी आदत हो सकती है लेकिन हर छोटी बात के लिए मन में डर बैठा देना स्वतंत्र चिंतन या आचरण के लिए घातक ही सिद्ध होता है।

तुलना का दोषपूर्ण तराजू

हमें लगता है कि किसी बेहतर और होशियार बच्चे से तुलना करके हम अपने बच्चे को उसके बराबर आने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। लेकिन क्या वास्तव में ऐसा ही होता है? नहीं, बच्चे को प्रेरित करने के भ्रम में हम उसे हतोत्साहित कर रहे होते हैं। और इस तुलना के चलते जब वह दबूपन का शिकार होता है तो हम फिर भय और लालच के अपने हथियार काम में लेने लगते हैं।

बचना होगा इस चक्रव्यूह से

बचपन में बच्चा प्रलोभन, भय और तुलना के इस चक्रव्यूह में फँस गया तो उससे बाहर निकलने में पूरा जीवन भी अक्सर कम पड़ जाता है। वह अपना 'स्व' ढूँढ़ ही नहीं पाता। परिवार, व्यवसाय या समाज - हर जगह ये तत्त्व उसे आगे बढ़ने से रोकते हैं। इससे बचने के लिए आवश्यक है कि अभिभावक बच्चों को गुणवत्तापूर्ण समय दें। धैर्य और संयम के साथ उनको समझें। स्वयं को शासक के बजाय साथी के रूप में प्रस्तुत करें।

आज भावनाओं के प्रशिक्षण को गौण ही मान लिया गया है। हालाँकि 'इमोशनल इन्टेलिजेन्स' के क्षेत्र में बहुत शोध हुए हैं। शिक्षा, व्यवसाय और परिवार जगत में इस दिशा में काम भी हो रहा है। लेकिन यह ऊँट के मुँह में जीरे के समान है। गहरे घर कर चुकी आदतों को दरकिनार कर नये शोध को जन स्वीकार्य बनने में लंबा समय लगता है।

लेकिन, तब तक कहीं बहुत देर न हो जाये!



हमसे जुड़ने के लिए
नीचे दिये गये चिह्न पर क्लिक करें



बढ़ते चलो अकेले पथ पर

■ सूर्यकुमार पांडेय, लखनऊ ■

एक चंद्रमा हर लेता है,
सारी जगती का अंधियारा।
एक फूल के खिल जाने से,
हँसने लगता उपवन सारा।

एक सूर्य के आ जाने से,
छिप जाती तारों की माला।
एक किरण के उग जाने से,
होता जीवन में उजियारा।

एक ज्योति मानव जीवन की,
नयी दिशाएं गढ़ जाती हैं।
एक स्वप्न साकार हुआ तो,
यह धरती हँसती-गाती है।

मेरे साथी, कुछ कर पाते,
क्यों न भला तुम यहाँ अकेले!
तुमने जीवन के आँगन में,
हर दिन नये खेल हैं खेले।

बढ़ते चलो अकेले पथ पर,
पी उत्साह पेय का प्याला।
यह दुनिया अनुसरण करेगी,
और पहनाएगी जयमाला।

तृप्ति

■ विष्णुकांत झा, वैशाली (बिहार)

पिता की मृत्यु के बाद सेठ दानीमल ने सोचा कि वह पूर्वजों द्वारा अनीति से अर्जित इस संपत्ति का उपयोग नहीं करेगा। उसने सैकड़ों यज्ञ किये। साल बीतते-बीतते उसने सारी संपत्ति दान कर दी। दो दिन की फाकाकशी के बाद उसने एक यज्ञ बेचने का निर्णय किया। पत्नी ने पड़ोसी से आटा उधार लेकर चार रोटियां दे दीं। सेठ एक यज्ञ बेचने निकल पड़ा। दोपहर होने पर खाने बैठा तो भूख से व्याकुल मरणासन्न कुत्ता ललचायी नजरों से रोटियों को देख रहा था। उसने एक रोटी कुत्ते को दे दी। कुत्ते की कातर आँखें अब भी अतृप्त थीं। सेठ ने दूसरी, तीसरी और अंतिम चौथी रोटी भी कुत्ते को दे दी। खाते ही कुत्ते ने छलाँग भरी और भाग गया। सेठ संतुष्ट हो गया। उसने पानी पीकर आगे की राह ली, पर चल न सका। एक वृक्ष की छाँव में लेट गया। झपकी आने लगी थी। तभी एक स्वर गूँजा -

“मुरलीधर की पत्नी हूँ, रधिया मेरा नाम।
मैं एक यज्ञ खरीदूँगी, बोलो उसका दाम।।”

आवाज सुनकर सेठ उठ बैठा। रधिया बोली - “मैं वह यज्ञ खरीदूँगी जो तुमने आज किया है।”

सेठ - “महीने बीते, मैंने कोई यज्ञ नहीं किया।”

रधिया - “आज तूने भूख से तड़पते कुत्ते को अपने हिस्से की रोटियां खिला दीं। मैं उसी को खरीदूँगी।”

सेठ - “वह तो मेरा धर्म था। मैं अपना धर्म नहीं बेच सकता।”

सेठ घर लौटा तो पत्नी गाड़ियों से सामान उतरवा रही थी। पूछने पर पता चला कि मुरलीधर यज्ञ की कीमत चुकाकर चला गया था। सेठ समझ गया कि भूखे को भोजन, प्यासे को पानी और फटेहाल को वस्त्र देना ही असली यज्ञ है।

मशीनों के बीच मनुष्य की खोज

■ अवनीश कुमार गुप्ता, प्रयागराज

दुनिया तेजी से ऐसी व्यवस्था की ओर बढ़ रही है जहाँ निर्णय, संवाद, व्यापार, शिक्षा, चिकित्सा, मनोरंजन और प्रशासन तक में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की भूमिका लगातार बढ़ रही है। नयी पीढ़ी उपकरणों के बीच बड़ी हो रही है। उसे हर प्रश्न का उत्तर स्क्रीन पर मिल जाता है, पर हर उत्तर ज्ञान नहीं होता। जानकारी और बुद्धि में वही अंतर है जो ज्यामिति बॉक्स और गणितज्ञ में होता है। बॉक्स में स्केल, कंपास, प्रोट्रैक्टर, पेंसिल सब होते हैं, पर वे स्वयं कोई आकृति नहीं बनाते। रचना हाथ और मस्तिष्क करता है। इसी तरह तकनीक साधन है, साध्य नहीं।

मानवीय मूल्य वे आधार हैं जिन पर समाज टिकता है सत्य, न्याय, सहानुभूति, परिश्रम, संयम, कर्तव्य, उत्तरदायित्व, सम्मान, विविधता की स्वीकृति और कमजोर के प्रति संवेदना। मशीनें नियम सीख सकती हैं, पर करुणा महसूस नहीं करतीं। वे चेहरे पहचान सकती हैं, पर आँसू का अर्थ नहीं समझतीं। वे भाषा लिख सकती हैं, पर मौन की पीड़ा नहीं सुनतीं। इसलिए तकनीक चाहे जितनी विकसित हो जाये, मनुष्य का स्थान तभी सुरक्षित रहेगा जब वह अपने भीतर के गुणों को जीवित रखेगा।

आज शिक्षा व्यवस्था पर सबसे गंभीर प्रश्न यही है। स्कूलों में बच्चे उत्तर याद कर रहे हैं, पर प्रश्न पूछना नहीं सीख रहे। विश्वविद्यालय डिग्री दे रहे हैं, पर विवेक कम दे रहे हैं। यदि छात्र केवल एआई से निबंध लिखवा लेगा, गणना करवा लेगा, प्रेजेंटेशन बनवा लेगा, तो उसकी मौलिकता कैसे बनेगी? शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी पाना नहीं,

निर्णय क्षमता का विकास है। आने वाले समय में वही सफल होगा जो मशीन से प्रतिस्पर्धा नहीं, मशीन का सही उपयोग करना जानेगा।

एक महत्वपूर्ण प्रश्न है - क्या एआई समाज को निष्पक्ष बनाएगी? उत्तर सीधा नहीं है। मशीनें वही सीखती हैं जो डेटा में होता है। यदि समाज में भेदभाव है, तो डेटा में भी होगा। यदि निर्णय प्रणाली पक्षपाती है, तो एल्गोरिद्म भी वैसा हो सकता है। इसलिए तकनीक को न्यायप्रिय मान लेना भूल है।

परिवारों में भी परिवर्तन दिखायी दे रहा है। एक ही घर में चार लोग बैठे हैं, पर चारों अलग स्क्रीन पर हैं। भविष्य की सबसे बड़ी गरीबी धन की नहीं, भावनात्मक दूरी की हो सकती है। यदि माता-पिता समय नहीं देंगे और बच्चे उपकरणों से संवाद सीखेंगे, तो वे सुविधा तो पाएँगे, पर आत्मीयता नहीं।

स्वास्थ्य क्षेत्र में तकनीक वरदान है। रोग की पहचान, दूरस्थ परामर्श, दवा प्रबंधन, आपातकालीन निगरानी - इन सबमें एआई उपयोगी है। पर यदि डॉक्टर केवल स्क्रीन पर रिपोर्ट देखे और रोगी की आँखों का डर न समझे, तो उपचार अधूरा रहेगा। डॉक्टर का स्पर्श, शिक्षक का प्रोत्साहन, मित्र का साथ, माँ का धैर्य - इनका डिजिटल विकल्प नहीं है।

अब उस ज्यामिति बॉक्स की ओर लौटें जिसकी चर्चा आरंभ में हुई। ज्यामिति बॉक्स का स्केल सीधापन सिखाता है, कंपास केंद्र और दूरी का संतुलन बताता है, प्रोट्रैक्टर कोणों की समझ देता है, पेंसिल गलती सुधारने का अवसर देती है, रबर विनम्रता सिखाती है कि भूल मिटायी जा सकती है। भविष्य की दुनिया भी ऐसे ही चलेगी। तकनीक स्केल है, दिशा मनुष्य देगा। एआई कंपास है, केंद्र मूल्य होंगे। डेटा प्रोट्रैक्टर है, पर कोणों की व्याख्या विवेक करेगा। कोई गलती होगी तो सुधार नैतिकता करेगी। यदि बॉक्स हो और विद्यार्थी न हो, तो कुछ नहीं बनता। यदि तकनीक हो और चरित्र न हो, तो समाज बिखरता है।



अखबार की सुर्खी

■ देवेन्द्रराज सुथार, जालोर

रामअवतार जी शहर के बीचोंबीच एक छोटी-सी परचून की दुकान चलाते थे, जो उनके पिता के जमाने से चली आ रही थी। एक दिन दुकान के सामने वाली सड़क पर नगर निगम वालों ने गड़ढा खोदा था, जो कई दिनों से वैसे ही पड़ा था, बिना किसी चेतावनी बोर्ड या घेराबंदी के। रामअवतार जी ने कई बार निगम कार्यालय जाकर शिकायत की थी कि किसी दिन कोई गिरकर चोटिल हो जाएगा, पर हर बार आश्वासन के सिवा कुछ नहीं मिला। एक शाम एक बूढ़ी औरत उस गड़ढे में गिर पड़ी, हल्की-सी चोट आयी। रामअवतार जी ने दौड़कर उसे संभाला, पानी पिलाया और रिक्शे में बिठाकर उसके घर तक छोड़वा आये। संयोगवश उस समय वहाँ से गुजर रहे एक स्थानीय अखबार के संवाददाता विनय ने फोटो खींच ली, रामअवतार जी द्वारा बूढ़ी औरत को सहारा देते हुए।

अगले दिन सुबह जब रामअवतार जी दुकान खोलने पहुँचे तो पड़ोसी मनोहर लाल ने अखबार दिखाते हुए कहा कि तुम्हारी तो फोटो छपी है। स्थानीय पन्ने पर एक बड़ी-सी हेडलाइन छपी थी - नगर के एक नेकदिल व्यापारी ने जान जोखिम में डालकर बुजुर्ग महिला की जान बचायी। रामअवतार जी हैरान रह गये, क्योंकि सच्चाई तो बस

इतनी थी कि उन्होंने एक गिरी हुई बूढ़ी औरत को उठाकर घर भिजवा दिया था, इसमें जान जोखिम में डालने जैसी कोई बात नहीं थी। पर अखबार में पूरी कहानी ही बदल दी गयी थी, लिखा गया था कि गड़ढे के पास बिजली का खुला तार भी था जिसे पार करते हुए रामअवतार जी ने बुजुर्ग महिला को बचाया, जबकि वहाँ ऐसा कोई तार था ही नहीं। रामअवतार जी ने सोचा कि चलो कोई बात नहीं, गलतफहमी होगी, अगले दिन 'भूल सुधार' छप जाएगा। पर दोपहर होते-होते मोहल्ले में लोग उन्हें बधाई देने आने लगे, कोई मिठाई लेकर आया तो कोई फूलमाला लेकर। रामअवतार जी असहज महसूस कर रहे थे, बार-बार सफाई देने की कोशिश करते कि भाई इतनी बड़ी बात नहीं थी, पर लोग इसे उनकी विनम्रता समझकर और प्रभावित होते जा रहे थे।

शाम में एक स्थानीय टीवी चैनल का रिपोर्टर कैमरा लेकर दुकान पर पहुँच गया, उसने रामअवतार जी से इंटरव्यू माँगा। रामअवतार जी ने मना करने की कोशिश की, पर रिपोर्टर जिद पर अड़ा रहा। रामअवतार जी ने सीधी सच्ची बात कही कि उन्होंने बस इंसानियत के नाते मदद की। पर जब रात को खबर प्रसारित हुई तो एंकर ने यह भी जोड़ दिया कि शहर में ऐसे गुमनाम हीरो कम ही मिलते हैं, जो अपनी जान की परवाह किये बिना दूसरों की मदद करते हैं। रामअवतार जी की पत्नी कौशल्या यह सब देखकर खुश हो रही थी। उसने कहा कि अरे तुम तो रातोंरात मशहूर हो गये, मुझे तो गर्व हो रहा है, पर रामअवतार जी के मन में एक अजीब-सी बेचैनी पनप रही थी। उन्हें लग रहा था कि जैसे कोई और आदमी उनकी जगह ले रहा है, जिसका असली रामअवतार से कोई वास्ता नहीं, बस नाम और चेहरा वही है।

अगले कुछ दिनों में यह खबर और फैलती गयी। राष्ट्रीय स्तर के एक पोर्टल ने उस स्थानीय अखबार की खबर को उठाकर अपने यहाँ छाप दिया, इस बार हेडलाइन और भी



नाटकीय थी, लिखा था - मामूली दुकानदार ने करंट लगने का खतरा मोल लेकर बचायी बुजुर्ग की जान। अब सोशल मीडिया पर भी रामअवतार जी की तस्वीर वायरल होने लगी, लोग उन्हें असली हीरो कहने लगे। एक स्थानीय नेता ने भी मौका भाँपकर रामअवतार जी के घर पहुँचकर उन्हें शॉल ओढ़ायी और फोटो खिंचवायी, जो अगले दिन फिर अखबार में छपी।

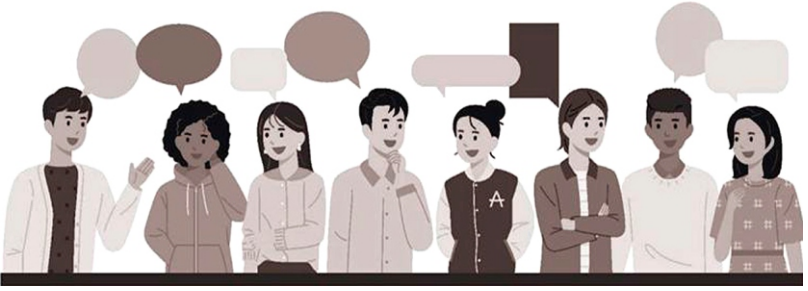
इसी बीच एक अप्रत्याशित मोड़ आया। नगर निगम के अधिकारियों को जब यह खबर मिली कि गड्ढे के पास बिजली के खुले तार की वजह से दुर्घटना हो गयी थी, तो उन्होंने जाँच बिठा दी, क्योंकि अगर सच में ऐसा तार था तो यह उनकी लापरवाही साबित होती और कई अधिकारियों पर गाज गिर सकती थी। जाँच टीम जब मौके पर पहुँची तो उसे कहीं कोई बिजली का तार नहीं मिला, सिर्फ एक साधारण-सा गड्ढा था जो अब तक भी भरा नहीं गया था। अधिकारियों ने यह बात ऊपर रिपोर्ट कर दी कि पूरी खबर ही गलत और बढ़ा-चढ़ा कर पेश की गयी थी। यह बात जैसे ही दूसरे अखबारों को पता चली, उन्होंने इसे एक नया मसाला समझ लिया। अगले दिन एक प्रतिद्वंद्वी अखबार ने हेडलाइन छापी - फर्जी हीरो का भंडाफोड़, असल में था ही नहीं कोई करंट का खतरा। इस खबर में रामअवतार जी को लगभग एक थोखेबाज की तरह पेश किया गया, मानो उन्होंने खुद ही अपनी झूठी वीरता की कहानी फैलायी हो, जबकि यह सब तो पहले संवाददाता विनय की कल्पना थी।

जो लोग कल तक रामअवतार जी की जय-जयकार कर रहे थे, वे आज उन्हें शक की निगाह से देखने लगे। रामअवतार जी बार-बार सफाई देने की कोशिश करते कि भाई मैंने तो कभी कुछ कहा ही नहीं, यह सब अखबार वालों का किया धरा है, पर कोई सुनने को तैयार नहीं था। यह अजीब विडंबना थी कि जब झूठी हीरोगीरी की खबर छपी थी, तब भी रामअवतार जी को कोई सफाई देने का मौका नहीं मिला था और अब जब झूठ का पर्दाफाश हो रहा था, तब भी उन्हीं को कठघरे में खड़ा किया जा रहा था।

कुछ दिनों बाद रामअवतार जी की दुकान पर रिपोर्टर विनय आया। उसके संपादक ने उसे डाँट लगायी थी और नौकरी जाने का खतरा पैदा हो गया था। उसने रामअवतार जी से कहा - “मुझे माफ कर दीजिए, असल में मुझे उस दिन कोई बड़ी खबर चाहिए थी, ऊपर से दबाव था कि कुछ सनसनीखेज भेजो, तो मैंने थोड़ा बढ़ा-चढ़ा कर लिख दिया, मुझे नहीं पता था कि बात इतनी आगे बढ़ जाएगी।”

रामअवतार जी ने कोई गुस्सा नहीं दिखाया, बस इतना पूछा - “अब इसका हल क्या है? मेरी तो जिंदगी ही उलट-पुलट हो गयी!” विनय के पास कोई जवाब नहीं था, उसने बस इतना कहा कि वह कोशिश करेगा कि सही खबर छपवा दे, पर यह कहते हुए भी उसकी आवाज में कोई भरोसा नहीं था, क्योंकि वह खुद जानता था कि एक बार बन चुकी कहानी को मिटाना आसान नहीं।

महीने भर बाद यह पूरा प्रकरण वैसे ही शांत हो गया जैसे अचानक शुरू हुआ था। रामअवतार जी का नाम धीरे-धीरे लोगों की जुबान से उतर गया। दुकान पर फिर वही पुराने ग्राहक आने लगे, वही रोजमर्रा की बातचीत, वही सामान्य जिंदगी, पर रामअवतार जी के भीतर कुछ हमेशा के लिए बदल गया था। वे अब अखबार पढ़ते समय हर खबर को शक की निगाह से देखते, सोचते कि पता नहीं इसके पीछे की असली कहानी क्या होगी, कौन सच है और कौन गढ़ा हुआ।



कितनी न्यायसंगत है राज्य हिंसा?

परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु -

शासन के विवेक पर हो संयम का अंकुश

अहिंसक जन-विरोध लोकतंत्र की दुर्बलता नहीं, उसकी जीवंत चेतना का प्रमाण है। असहमति को राजद्रोह और प्रश्न को अवज्ञा मान लेना सत्ता के विवेक को संकुचित करता है। राज्य-बल का प्रयोग केवल ऐसी अपरिहार्य परिस्थिति में उचित हो सकता है, जहाँ जन-सुरक्षा अथवा विधि-व्यवस्था की रक्षा का कोई अहिंसक विकल्प शेष न हो, वह भी न्यूनतम, आनुपातिक, उत्तरदायी और न्यायोचित होना चाहिए। लोकतंत्र की गरिमा वहीं सुरक्षित रहती है, जहाँ शासन के हाथ में शक्ति हो, किंतु उसके विवेक पर संयम का अंकुश हो।

- मधु वैष्णव 'मान्या', जोधपुर

संवाद से अहिंसक समाज का निर्माण संभव

लोकतंत्र में शांतिपूर्ण जनविरोध नागरिक अधिकार है। अहिंसक प्रदर्शन को केवल असहमति के कारण हिंसा से दबाना लोकतांत्रिक मूल्यों के विरुद्ध है। यदि प्रदर्शन हिंसक हो जाये, तब भी बल-प्रयोग आवश्यक सीमा तक ही होना चाहिए। न्याय, समानता, शिक्षा, संवेदनशील शासन और संवाद से अहिंसक समाज का निर्माण संभव है। भगवान महावीर ने अहिंसा, करुणा और आत्मसंयम

को जीवन का आधार माना, जबकि महात्मा गांधी ने सत्याग्रह के माध्यम से अहिंसा को सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन का साधन बनाया। विश्व अहिंसा दिवस हमें याद दिलाता है कि स्थायी शांति बल से नहीं, बल्कि न्याय, सत्य, संवाद और मानवीय गरिमा के सम्मान से स्थापित होती है।
- गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', लखनऊ

अहिंसा है सर्वोत्तम आदर्श

आजकल नागरिक संगठनों में भी एक चलन प्रारम्भ हो गया है - सरकार को डिक्टेट करने का। भीड़जनित हिंसा से राज्य कैसे पार पाये? यह मौजूदा समय का एक बड़ा सवाल है। हाल के वर्षों में भीड़ सरकारों को डराने भी लगी है। सरकारी हिंसा के कुछ दायरे हैं, लेकिन अराजकतावादी सभी दायरों से बाहर होते हैं। गांधी और महावीर का देश है भारत। समन्वय का कोई विकल्प ही नहीं है लेकिन एक बड़ा तबका जब हिंसा पर उतारू हो तो उसे संभालना टेढ़ी खीर हो जाता है। अहिंसा सर्वोत्तम आदर्श है। उसे जीवन में शामिल किया जाना चाहिए, पर लॉ एंड ऑर्डर को संभालने के लिए एक सीमित दायरे में राज्य आधारित हिंसा उस अराजकता से बेहतर है जो हिंसा की जननी हो।

- नवलेश कुमार, वारिसलीगंज

न्याययुक्त एवं समतामूलक वातावरण बनाएं

लोकतंत्र में नागरिकों को शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शन का अधिकार दिया गया है। वहीं, हिंसक विरोध को दबाने के लिए राज्य को अपनी प्रदत्त शक्ति का सीमित दायरे में ही प्रयोग करना चाहिए, जिससे लोकतांत्रिक मूल्य कमजोर न हों। राज्य की हिंसा पर नियंत्रण के लिए मीडिया एवं न्यायपालिका का स्वतंत्र होना अति आवश्यक है। राज्य द्वारा बल का प्रयोग आवश्यकता एवं जवाबदेही के सिद्धांतों के अनुरूप होना चाहिए। अहिंसक समाज के निर्माण के लिए राज्य के हर नागरिक का शिक्षित होना व संवाद के

जरिये न्याययुक्त एवं समतामूलक वातावरण का निर्माण
अति आवश्यक है। - महाशिवेश भास्कर, समस्तीपुर

आगामी परिचर्चा का विषय

अगले वर्ष, जो हम दोहराना नहीं चाहेंगे!

◆ हर व्यक्ति के मन में नये वर्ष की नयी ख्वाहिशें होती हैं - ये करना है, वो करना है!

◆ लेकिन कभी-कभी, करने से अधिक यह तय करना महत्वपूर्ण होता है कि क्या नहीं करना है।

◆ आइए, दिसंबर की परिचर्चा में हम वो बातें साझा करें जो इस वर्ष की गयीं लेकिन अगले वर्ष हम नहीं करना चाहेंगे?

◆ आप अपने व्यक्तिगत जीवन में 2026 की किन बातों, घटनाओं या विचारों के पुनः प्रवेश को 2027 में प्रतिबंधित करना चाहेंगे?

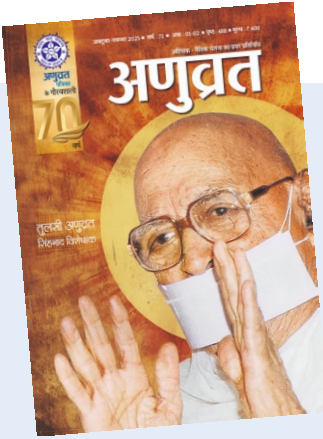
◆ सामाजिक, राष्ट्रीय और वैश्विक जगत के 2026 में घटित किन वाक्यों को आप दोहराते हुए नहीं देखना चाहेंगे?

◆ नव-वर्ष 2027 की पूर्व तैयारी के रूप में आइए, भीतर के मन को टटोलते हैं।

‘अणुव्रत’ पत्रिका के दिसम्बर 2026 अंक में प्रकाशित होने वाली परिचर्चा के लिए अपने सारगर्भित व अनुभवजन्य विचार हमें अधिकतम 200 शब्दों में 10 नवम्बर 2026 तक निम्न व्हाट्सएप के माध्यम से लिख भेजिए।



9116634512



अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी के पावन जन्म की 111 वर्षीय परिसम्पन्नता तथा उनकी मुनि दीक्षा के 100 वर्ष पूर्ण होने के साथ ही अणुव्रत पत्रिका के प्रकाशन के 71वें वर्ष

में प्रवेश पर प्रकाशित 'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद विशेषांक' (अक्टूबर-नवम्बर 2025) के संदर्भ में हमें निरंतर संवाद और सम्मतियाँ प्राप्त हो रही हैं। 'पाठक परख' के अंतर्गत आप प्रबुद्ध पाठकों के मूल्यवान विचारों से परिचित हो सकेंगे।

नैतिक चेतना का साहित्यिक घोष

अहिंसा, नैतिकता और आत्मानुशासन की भारतीय परंपरा में यदि किसी आंदोलन ने आधुनिक समय में जनमानस को जाग्रत करने का सतत प्रयत्न किया है, तो वह अणुव्रत आंदोलन है। इसी चेतना को सात दशकों से निरंतर शब्द दे रही प्रतिष्ठित अणुव्रत पत्रिका का 'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद विशेषांक' अपने स्वरूप, विषय-विस्तार और भाव-गांभीर्य में एक ऐतिहासिक दस्तावेज जैसा प्रतीत होता है। संपादक संचय जैन तथा सह संपादक मोहन मंगलम के संयोजन में प्रकाशित यह विशेषांक न केवल दस्तावेज है, बल्कि विचार-प्रसार का सशक्त माध्यम भी है।

यह विशेषांक अपनी संरचना में सुव्यवस्थित और उद्देश्य में स्पष्ट है। यहाँ अणुव्रत को किसी धार्मिक आंदोलन की सीमा में नहीं बाँधा गया, बल्कि उसे सार्वभौमिक नैतिक अनुशासन के रूप में व्याख्यायित किया गया है, यही इसकी प्रमुख शक्ति है।

पत्रिका का सफरनामा खंड सात दशकों की प्रकाशन-यात्रा को स्मृति-पटल पर उकेरता है। यह खंड पाठक को यह अनुभव कराता है कि किसी विचार की दीर्घजीविता उसके साहित्यिक दस्तावेजों में ही सुरक्षित रहती है।

साहित्यिक दृष्टि से यह विशेषांक परिपक्व भाषा, संतुलित भावाभिव्यक्ति और गंभीर वैचारिकता का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह केवल एक श्रद्धांजलि अंक नहीं, बल्कि नैतिक चेतना का साहित्यिक घोष है।

- प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश', प्रयागराज

उत्कृष्ट व संग्रहणीय विशेषांक

आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत जैसे जन-धर्म का प्रवर्तन किया। अशांत विश्व को शांति का संदेश दिया। अणुव्रत आंदोलन अनैतिकता व चरित्रहीनता के तिमिर के बीच मानवता को आलोकित करने में समर्थ है। आचार्य श्री तुलसी की मुनि दीक्षा के 100वें वर्ष और अणुव्रत पत्रिका के गौरवशाली 70वें वर्ष पर प्रकाशित तुलसी अणुव्रत सिंहनाद विशेषांक सर्वथा उत्कृष्ट व संग्रहणीय बन पड़ा है।

- गजानन पांडेय, हैदराबाद

कालजयी चिंतन का संपादकीय अनुष्ठान

आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित 'अणुव्रत' दर्शन मानवता के रक्षण, संवर्धन व परिशोधन के लिए प्रस्तुत ज्योति का एक पुंज है जिसे अनेक भाष्यकारों की गहन और बहुआयामी टीका, गवेषणा व शोधपरक स्थापनाओं द्वारा इस विशेषांक में प्रस्तुत किया गया है। सुधी पाठकगण के लिए यह एक कालजयी चिंतन का संपादकीय अनुष्ठान है। संपादक श्री संचय जैन के गहन, व्यापक व उच्च कोटि के नेतृत्व में तैयार यह विशेषांक शोधार्थी विद्यार्थियों के लिए पथ प्रदर्शक बनेगा, ऐसा विश्वास है।

- डॉ. राकेश तैलंग, कांकरोली



युवाचार्य श्री महावीरकुमार ने सत्य धर्म को विवेचित किया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा ने वाणी संयम दिवस पर श्रद्धालुओं को प्रेरणा प्रदान की। साध्वीवर्याश्री सम्बुद्धयशा ने लोकवाद को व्याख्यायित किया।



अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2026 विद्यालय से राष्ट्रीय मंच तक रचनात्मकता और प्रतिभा का अभियान

राष्ट्रीय संयोजक राजेश चावत की रिपोर्ट

“हमारी ताकत – हमारा परिवार” विषय को लेकर अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) के तत्वावधान में आयोजित अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2026 विद्यार्थियों की रचनात्मकता, संस्कार एवं प्रतिभा का राष्ट्रव्यापी और अंतरराष्ट्रीय उत्सव बनकर उभर रहा है।

आंध्र प्रदेश, असम, बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल आदि राज्यों से विद्यालयों की सहभागिता दर्ज हुई है। अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2026 की सबसे विशेष उपलब्धियों में से एक इसका अंतरराष्ट्रीय विस्तार भी है। भारत के विभिन्न राज्यों के साथ नेपाल के विभिन्न क्षेत्रों के विद्यार्थियों ने भी प्रतियोगिता की विभिन्न विधाओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

अब तक लगभग 1,800 विद्यालय प्रतियोगिता से जुड़े चुके हैं तथा लगभग 57,000 विद्यार्थियों की सहभागिता दर्ज की गयी है। विद्यालय स्तर पर चयनित विद्यार्थी आगामी जिला एवं राज्य स्तरीय चरणों में अपनी प्रतिभा को आगे ले जाएंगे।



जीवन विज्ञान विशेष कार्यकर्ता प्रशिक्षण

राष्ट्रीय संयोजक उमेन्द्र गोयल की रिपोर्ट

लाडनूं। योगक्षेम वर्ष के उपलक्ष में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में 'जीवन विज्ञान विशेष कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला' का आयोजन 25 अगस्त को हुआ। कार्यशाला का शुभारम्भ अणुव्रत अनुशास्ता के मंगलपाठ से हुआ। इस अवसर पर अणुविभा के उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, जीवन विज्ञान के राष्ट्रीय संयोजक उमेन्द्र गोयल, वरिष्ठ जीवन विज्ञान प्रशिक्षक राकेश खटेड़, जीवन विज्ञान की राष्ट्रीय विद्यालय समन्वयक रीना गोयल, राष्ट्रीय प्रशिक्षण प्रभारी रचना कोठारी आदि उपस्थित रहे।

जीवन विज्ञान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार एवं मुनिश्री धर्मेशकुमार की उपस्थिति में अणुव्रत भवन सेमिनार कक्ष में कार्यशाला के उद्घाटन सत्र का शुभारम्भ सामूहिक अणुव्रत गीत संगान के साथ हुआ।

इस अवसर पर मुनिश्री मननकुमार ने जीवन विज्ञान के प्रबन्धन हेतु वर्तमान संगठनात्मक ढाँचे की जानकारी देते हुए इसे और अधिक सुदृढ़ एवं व्यवस्थित बनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि जीवन विज्ञान एक बड़ा उपक्रम है। समाज ने इसके विकास के लिए विगत लगभग पाँच दशकों से अपनी ऊर्जा का नियोजन किया है। जीवन विज्ञान का 50वां वर्ष सामने है। अगले दस वर्ष जीवन विज्ञान के विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इन दस वर्षों में

इसके विकास हेतु हमें निरन्तर अथक प्रयास करना होगा। मुनिश्री धर्मेशकुमार ने कहा कि आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ ने अणुव्रत आंदोलन, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के माध्यम से स्वस्थ समाज संरचना की दिशा में ठोस कार्य किया। फलस्वरूप जीवन का निर्माण करने वाली शिक्षा का प्रादुर्भाव हुआ। जीवन विज्ञान का नामकरण 28 दिसम्बर, 1978 को हुआ। 2027 से 50वां वर्ष प्रारम्भ होगा। हमें 50वें वर्ष को जोर-शोर से मनाना है।

परिचय-सत्र के उपरान्त विनोद कोठारी, राकेश खटेड़, अभिषेक कोठारी, रीना गोयल, कल्पना बच्छावत, भगवत सिंह, रचना कोठारी, रेणु चौरड़िया, राधारानी शर्मा आदि संभागियों ने भी विचार रखे। कार्यशाला का संचालन जीवन विज्ञान के राष्ट्रीय संयोजक उमेन्द्र गोयल ने तथा आभार ज्ञापन राष्ट्रीय सह-संयोजक अभिषेक कोठारी ने किया।

हिन्दी व अँग्रेजी की प्रसिद्ध द्विभाषी बाल पत्रिका 60 पृष्ठ... रंगीन चित्रों के साथ..



अणुविभा का
मासिक प्रकाशन

बच्चों का
देश
राष्ट्रीय बाल मासिक

श्रेष्ठ बाल साहित्य रचनाकारों द्वारा सृजित कहानियाँ,
कविताएँ, नाटक, पहेलियाँ व ढेरों जानकारीयाँ।
नियमित पत्रिका मँगवाने के लिए देखें पृष्ठ 36

नवीनतम अंक पढ़ने के लिए पुस्तक के चिह्न पर क्लिक करें..



विद्यार्थियों को भा रहा अणुव्रत किडजोन

राष्ट्रीय संयोजक चमन दुधोड़िया की रिपोर्ट

लाडनूं। जैन विश्व भारती परिसर में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा संचालित किडजोन विद्यार्थियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। गत 15 जुलाई से 10 सितम्बर तक 23 स्कूलों से 876 विद्यार्थी किडजोन पहुँचे तथा आचार्य श्री महाश्रमण के आशीर्वचन प्राप्त करने के साथ ही मुनिश्री मनन कुमार से नशामुक्ति के संकल्प ग्रहण किये। इस दौरान समय-समय पर किडजोन पधारे अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़, महामंत्री मनोज सिंघवी, उपाध्यक्ष डॉ. कुसुम लुनिया आदि ने नित्य संकल्पों के बारे में बच्चों को प्रेरणा दी। निवर्तमान महामंत्री भीखम सुराना, सह मंत्री सुरेन्द्र नाहटा, संगठन मंत्री पायल चौरड़िया, काव्यधारा संयोजक डॉ. धनपत लुनिया तथा संयोजक विनोद बच्छावत ने भी बच्चों का उत्साहवर्धन किया।

सलोनी बारसा ने बच्चों को योग और प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करवाया। बच्चों ने नैतिक शिक्षा पर आधारित चलचित्र देखने के साथ ही ऑनेस्टी शॉप से ईमानदारी सीखी। बच्चों के मनोरंजन के लिए उन्हें अनेक तरह के खेल खिलाये गये। कार्यक्रम का संचालन नवीन नाहटा ने किया। शंकर, राकेश एवं आरती व्यवस्था में सहायक रहे। अणुव्रत समिति लाडनूं का रचनात्मक सहयोग निरंतर विद्यार्थियों को लाभान्वित करता रहा। उल्लेखनीय है कि इस किडजोन के प्रायोजक राकेश आरती कठोटिया हैं।

पौधे लगाये, संरक्षण का लिया संकल्प

राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. नीलम जैन की रिपोर्ट

अणुव्रत समिति, रतनगढ़ द्वारा संचियालाल बैद आदर्श विद्या मंदिर में पौधरोपण किया गया। कार्यक्रम में मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी संदीप कुमार व्यास मुख्य अतिथि थे। समिति अध्यक्ष कुलदीप व्यास ने पर्यावरण जागरुकता के लिए संचालित विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। विद्यालय प्राचार्य शरद कुमार शर्मा ने विद्यार्थियों को अभियान में सहयोग का संकल्प कराया।

अणुव्रत समिति, किशनगंज द्वारा 'मेरा पौधा, अणुव्रत के साथ' अभियान के अंतर्गत तेरापंथ भवन में 120 तथा अणुव्रत वाटिका में 200 पौधे लगाये गये। समिति द्वारा पर्यावरण संरक्षण के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से गणमान्यजनों को ईको-फ्रेंडली कैरी बैग भी भेंट किये गये। कार्यक्रम में समिति अध्यक्ष रश्मि बैद सहित सदस्यों की सक्रिय सहभागिता रही।

अणुव्रत मंच, गंगापुर द्वारा भूत बावजी के पास स्थित शास्त्री पार्क, शास्त्री नगर गार्डन में पौधरोपण किया गया। मंच के सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं ने हजारों, नीम एवं गुड़हल के 50 पौधे लगाये तथा उनके संरक्षण का संकल्प लिया। मंच की संयोजिका प्रीति रांका ने कहा कि इन पौधों की नियमित देखभाल एवं संरक्षण भी हमारी जिम्मेदारी है।

अणुव्रत समिति, दिनहाटा। मदन मोहन पारा शारदा शिशु तीर्थ स्कूल में विज्ञान एवं गणित प्रदर्शनी मेले का आयोजन किया गया, जिसमें 18 स्कूलों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ पश्चिम बंगाल के शिक्षा एवं दमकल विभाग के मंत्री कौशिक चौधरी ने किया। इस अवसर पर स्कूल प्राचार्य उत्तम राय, समिति अध्यक्ष धर्मेन्द्र कुमार सुराणा सहित कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित रहे।



बाल संबल में अणुव्रत वाटिका का निर्माण

अणुव्रत समिति, जयपुर द्वारा गणेश चतुर्थी पर बाल संबल में अणुव्रत वाटिका के निर्माण का शुभारंभ किया गया। यह पहल अणुविभा ट्रस्टी एवं परामर्शक पंचशील जैन की प्रेरणा से हुई। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष विनोद बैद ने कहा कि अणुव्रत वाटिका का निर्माण बच्चों को प्रकृति, पर्यावरण एवं संस्कारों से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। मंत्री डॉ. जयश्री सिद्धा ने सभी बच्चों एवं उपस्थितजनों को अणुव्रत आचार संहिता के 11 नियमों की शपथ दिलायी। समिति की ओर से बच्चों को हैंडराइटिंग किट, पेन तथा लड्डू वितरित किये गये। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति के कार्यकारिणी सदस्य शक्रेंद्र जैन तथा बाल संबल के शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

अणुव्रत समिति मैसूर का सम्मान

मैसूर। पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में किये गये कार्यों के लिए महारानी त्रिशिका कुमारी वाडियार ने मैसूर पैलेस में आयोजित कार्यक्रम में अणुव्रत समिति मैसूर की टीम को सम्मानित किया। नम्मरा प्रोजेक्ट के अंतर्गत अणुव्रत समिति ने कर्नाटक सरकार, मैसूर सिटी कॉर्पोरेशन, मैसूर ग्राहक परिषद् एवं सीआईआई के सहयोग से 1,21,789 वृक्षों का ऑडिट किया।



बच्चों के मन को पढ़ने की पाठशाला है बालोदय शिविर

राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. सीमा कावड़िया की रिपोर्ट

राजसमंद। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से अणुविभा मुख्यालय चिल्ड्रन'स पीस पैलेस में संचालित किये जाने वाले बालोदय शिविर बच्चों के मन को पढ़ने की पाठशाला की भूमिका का निर्वहन सफलतापूर्वक कर रहे हैं। पैरामाउंट इंटरनेशनल सीनियर सेकंडरी स्कूल, देवपुरा केलवा के करीब 200 बच्चों ने यहाँ 17 से 19 अगस्त, 22 से 24 अगस्त तथा 25 से 27 अगस्त तक आयोजित तीन दिवसीय अणुव्रत बालोदय शिविरों में योगाभ्यास एवं ध्यान से दिन की शुरुआत कर एक अच्छा जीवन जीने में सहयोगी अनेक छोटी-छोटी बातों का अभ्यास किया। जिन बातों के लिए अधिकांश बच्चे संकल्पित हुए, उनमें मौन भोजन अभ्यास, टीवी दर्शन में संयम, जूठा न छोड़ना और स्वच्छता बोध, डायरी लेखन आदि बातें शामिल थीं।

अणुविभा उपाध्यक्ष तथा वरिष्ठ बाल चिकित्सक डॉ. विमल कावड़िया ने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य वर्धन के लिए बच्चों को प्रेरित किया। अणुविभा के सहमंत्री जगजीवन चौरड़िया ने बच्चों को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि शिविर में जो संस्कार सीखे हैं, उन्हें अपने जीवन में उतारें। डॉ. सीमा कावड़िया ने पोषण एवं मेडिटेशन पर वार्ता प्रस्तुत की। बच्चों ने बाल मासिक पत्रिका 'बच्चों का देश' में प्रकाशित कहानियों एवं एकांकी का मंचन किया।



अणुव्रत व्याख्यानमाला

संयम है अणुव्रत दर्शन का आधार

प्रयागराज। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के प्रकल्प अणुव्रत व्याख्यानमाला के अंतर्गत 10 सितम्बर को नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, प्रयागराज में अणुव्रत दर्शन पर व्याख्यान आयोजित हुआ। इसमें अणुव्रत व्याख्यानमाला के राष्ट्रीय संयोजक प्रोफेसर आनंद प्रकाश त्रिपाठी रत्नेश ने कहा कि अणुव्रत दर्शन का आधार संयम है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संयम आवश्यक है। अणुव्रत साधन शुद्धि पर बल देता है। उन्होंने अहिंसा, सह-अस्तित्व, समानता, परस्परता एवं न्याय को अणुव्रत दर्शन का आधार बताया। अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति प्रोफेसर बृज बिहारी तिवारी ने अणुव्रत और अणुबम की तुलना करते हुए अणुबम को विध्वंस और अणुव्रत को संरचना का आधार बताया। उन्होंने जीवन-निर्माण के लिए अणुव्रत की साधना को श्रेयस्कर बताया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में संतोष शुक्ला ने अणुव्रत गीत का गायन किया। दर्शनशास्त्र विभाग के अध्यक्ष अरविंद शुक्ला ने प्रो. त्रिपाठी का परिचय दिया और स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत करने के साथ ही अणुव्रत के मूल्यों की चर्चा की। अंत में डॉ. रेनू तिवारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संयोजन दर्शन विभाग के प्रोफेसर राजेश तिवारी ने किया।



पूर्व शिक्षकों का सम्मान

भीलवाड़ा। अणुव्रत समिति की ओर से 6 सितम्बर को मुनिश्री यशवंत कुमार के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में सेवानिवृत्त शिक्षकों का सम्मान किया गया। इस सम्मान समारोह के दौरान डॉ. रोशन लाल पितलिया, डॉ. डी. सी. जैन, मदन लाल कावड़िया, सुख लाल हिरन, रतन लाल खाब्या, शांति लाल सिंघवी, पुष्पा बापना, विमला कावड़िया, डॉ. मंजू कोठारी, प्रो. लाल चंद नौलखा, मदन लाल टोडरवाल, कमला जैन, सुनीता लोढ़ा का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन समिति अध्यक्ष अभिषेक कोठारी ने किया।

बच्चों ने लिया नशामुक्ति का संकल्प

बेंगलुरु। अणुव्रत समिति की ओर से साध्वीश्री पावन प्रभा के सान्निध्य में डी.वी.वी. गुजराती शाला के प्रांगण में विशेष जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वीश्री आत्मयशा ने बच्चों को बुरी आदतों से दूर रहकर सकारात्मक सोच, आत्मसंयम और अच्छे संस्कारों को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में करीब 280 बच्चों ने नशे से सदैव दूर रहने का संकल्प लिया। इस अवसर पर शाला के कार्यदर्शी पराग छाटबार, प्रधानाध्यापक मंजूनाथ, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष ललित बाबेल, मंत्री लाभेश कांसवा सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।



1

मैं किसी भी
निरपराध प्राणी का
संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा।

- मैं आत्म-हत्या नहीं करूँगा।
- मैं भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।

2

मैं आक्रमण नहीं करूँगा।
• आक्रामक नीति का समर्थन
नहीं करूँगा। • विश्व-शांति तथा
निःशस्त्रीकरण के लिए
प्रयास करूँगा।

3

मैं हिंसात्मक
एवं तोड़-फोड़ मूलक
प्रवृत्तियों में भाग
नहीं लूँगा।

4

मैं मानवीय एकता में
विश्वास करूँगा। • जाति, रंग
आदि के आधार पर किसी को
ऊँच-नीच नहीं मानूँगा।
• अस्पृश्य नहीं मानूँगा।

5

मैं धार्मिक
सहिष्णुता रखूँगा।
• साम्प्रदायिक उत्तेजना
नहीं फैलाऊँगा।

6

मैं व्यवसाय और
व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा।
• अपने लाभ के लिए दूसरों को
हानि नहीं पहुँचाऊँगा। • छलपूर्ण
व्यवहार नहीं करूँगा।

7

मैं ब्रह्मचर्य की
साधना और संग्रह की
सीमा का निर्धारण
करूँगा।

8

मैं चुनाव के
संदर्भ में अनैतिक
आचरण नहीं
करूँगा।

9

मैं
सामाजिक रूढ़ियों
को प्रश्रय नहीं
दूँगा।

10

मैं व्यसन-मुक्त जीवन
जीऊँगा। • मादक तथा नशीले
पदार्थों - शराब, गांजा, चरस,
हेरोइन, भांग, तम्बाकू आदि
का सेवन नहीं करूँगा।

11

मैं पर्यावरण की
समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा।
• हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा।
• पानी-बिजली आदि का
अपव्यय नहीं करूँगा।

उपरोक्त संकल्पों में से सभी या अपने
भावानुसार संकल्प लेने के लिए सामने
दिये गये चित्र पर क्लिक करें..





अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

के गौरवशाली प्रकाशन



'अणुव्रत'

पत्रिका

प्रकाशन के **70** वर्ष

विशेष
छूट
योजना

'बच्चों का देश'

पत्रिका

प्रकाशन के **25** वर्ष

सदस्यता अभिवृद्धि के आकर्षक अभियान से जुड़िए

अवधि	अणुव्रत	बच्चों का देश
1 वर्ष	₹ 800	₹ 500
3 वर्ष	₹ 2200	₹ 1350
5 वर्ष	₹ 3500	₹ 2100
15 वर्ष (योगक्षेमी)	₹ 21000	₹ 15000



भुगतान के लिए
QR कोड को
स्कैन करें

ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY
IDBI BANK Rajsamand Branch
A/c No.: 104104000046914
IFSC Code : IBKL0000104

इस मुहिम में अणुव्रत समिति और अणुव्रत मंच के साथ-साथ
रुचिशील कार्यकर्ता व्यक्तिगत स्तर पर भी जुड़ सकते हैं।

विशेष सदस्यता अभियान की जानकारी के लिए सम्पर्क करें

- संयोजक : विनोद बच्छावत +91 88263 28328
- कार्यालय : +91 91166 34512, 94143 43100